आचरण कैसा हो ?

आचरण कैसा हो?

सन्तराम वत्स्य

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नयी दिल्ली • जयपुर • इलाहाबाद

दो शब्द

हम किसी पढ़े-लिखे और अनपढ़ व्यक्ति में अन्तर कैसे मालूम करते हैं ? —उसके आचरण और शिष्टाचार से। किसी व्यक्ति के बात करने एवं प्रत्येक छोटे-बड़े काम को करने के ढंग से पता लग सकता है कि वह व्यक्ति अनपढ़, गंवार है या सभ्य, शिष्ट, पढ़ा-लिखा। जीवन में सफलता के लिए भी उत्तम आचरण और शिष्टाचार बहुत आवश्यक है। वास्तव में शिक्षा के उद्देश्यों में से यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है कि हमारे युवक सभ्य, शिष्ट और उत्तम आचरण वाले बनें। बिना शिष्ट आचार के विद्या-प्राप्ति व्यर्थ है।

यह पुस्तक बच्चों को शिष्टाचार और उत्तम आचरण की शिक्षा देने के लिए लिखी गई। आशा है, इस पुस्तक से बच्चे पूरा लाभ उठाएंगे और अपने शिष्ट व्यवहार से सदा अपने को सभ्य और शिक्षित प्रमाणित कर सकेंगे।

—लेखक

क्रम

मीठा बोलो ५
'आप' और 'तुम' ७
नमस्ते ९
कहना मानो ११
भूल सबसे होती है १२
जब कोई घर आये १५
ऐसे बैठो १८
न पूछना, न बताना २०
बाएँ चलो २१
खेल में २२
बक्का-मुक्की बन्द करो २४
दूसरों पर हँसो मत २५
जहाँ-तहाँ लिखो मत २७
खाना-पीना ३१
एक बार में एक काम ३७
लापरवाह मत बनो ४०
बुरे बालक, भले बालक ४४
कक्षा में ४५
सभा में ४७

मीठा बोलो

वह देखो, सामने कौआ बैठा है।
'काँय-काँय' कर रहा है।
इसकी 'काँय-काँय' सुनने में बुरी लगती है।
इसे कोई नहीं चाहता।
सभी ढेला मारकर उड़ा देते हैं।

यह आम का पेड़ है।
डाली पर कोयल बैठी है।

कोयल कूक रही है ।
इसकी कूक सुनने में बहुत भली लगती है ।
इसे सभी चाहते हैं ।
इसे कोई भी ढेला नहीं मारता ।

कौए का रंग काला है ।
कोयल भी काली है ।
दोनों का रंग एक जैसा है ।
पर कोयल को सभी चाहते हैं ।
कौए को कोई नहीं चाहता ।
जानते हो, क्यों ?

कोयल मीठा बोलती है ।
कौआ कड़वा बोलता है ।
मीठी बोली सबको अच्छी लगती है ।
कड़वी बात कोई नहीं सुनना चाहता ।

इसलिए तुम भी मीठा बोलो ।
मीठी चीजें सबको भली लगती हैं ।
अच्छे बालक सदा मीठा बोलते हैं ।
कड़वी बात सुनकर सबका जी दुखता है ।
तुम कभी भी कड़वी बात मत बोलो ।

'आप' और 'तुम'

घर में कई लोग हैं।
तुम्हारे पिता जी हैं। तुम्हारी माता जी है।
दादा जी हैं। दादी जी है।
चाचा जी हैं। बड़े भैया जी है।
बड़ी बहन जी है।
ये सब तुमसे बड़े हैं।
बड़ों से 'आप' कहकर बोलो।

'तू' या 'तुम' कहना ठीक नहीं।
कहने में क्या लगता है?
फिर किसी को 'तू' क्यों कहो?
सभी को 'आप' कहो।

ये रमेश जी हैं।
रमेश जो तुम्हारे साथी है।
एक ही पाठशाला में पढ़ते हो।
एक ही कक्षा में पढ़ते हो।
एक ही मैदान में खेलते हो।

एक ही गली में रहते हो।
तुम दोनों बराबर के हो।
कोई छोटा-बड़ा नहीं है।

बराबर वालों को 'आप' कहकर बोला करो।
छोटा भाई है। छोटी बहन है।
दोनों तुमसे छोटे हैं।
उन्हें 'तू' मत कहो, उन्हें 'तुम' कहकर पुकारो।
तुम दूसरों का आदर करो।
वे तुम्हारा आदर करेंगे।
तुम उन्हें 'जी' कहो।
वे तुम्हें 'जी' कहेंगे।
तुम अपना आदर चाहते हो,
तो दूसरों का भी आदर करो।

नमस्ते

तुम प्रतिदिन घर में देखते हो—
कोई मेहमान आता है।
कोई बाहर का आदमी आता है।
तुम्हारे पिताजी को 'नमस्ते' कहता है।
वे भी 'नमस्ते' का उत्तर 'नमस्ते' से देते हैं।
वह भी हाथ जोड़ता है।
वे भी हाथ जोड़ते हैं।

वह भी सिर झुकाता है।
वे भी सिर झुकाते हैं।
तुम भी इसी तरह करो।
प्रातः उठो तो घर के बड़े लोगों को 'नमस्ते' कहो।
किसी के घर जाओ तो उनको नमस्ते कहो।
पाठशाला जाओ तो गुरुजी को नमस्ते कहो।
मित्रों से मिलो तो उन्हें भी नमस्ते कहो।
कोई तुमसे छोटा तुमसे नमस्ते कहे—
तो उत्तर में नमस्ते कहो।
जब किसी से मिलो, नमस्ते कहो।
जब किसी से बिछुड़ो, नमस्ते कहो।
नमस्ते का अर्थ जानते हो न ?
नहीं जानते हो तो समझ लो।
'नमस्ते', 'नमस्कार', 'प्रणाम',
'जय हिन्द', 'जयरामजी की'—
इन सबका एक ही अर्थ है—
दूसरों का मान करना।
दूसरों का आदर करना, बड़ाई करना।
यह अच्छी बात है।
अच्छे बालक दूसरों का मान करते हैं।
अच्छे बालकों का सभी मान करते हैं।

कहना मानो

माताजी का कहना मानो।
पिताजी का कहना मानो।

गुरुजी का कहना मानो।
अपने से बड़ों का कहना मानो।
बड़ों की बात को मन लगाकर सुनो।
सुना-अनसुना मत करो।
बड़े जैसा कहें, वैसा करो।
वे तुम्हारे भले की बात कहेंगे।

उनकी बात मानोगे, तो सुख पाओगे।
जो बड़ों की बात नहीं मानते,
वे दुःख पाते हैं।
अच्छे बालक सदा बड़ों का कहना मानते हैं।
बड़े जैसा कहते हैं, वे वैसा ही करते हैं।

भूल सबसे होती है

कमल पाठशाला जा रहा था। उसके पिताजी ने कहा—"कमल, एक मिनट ठहरो। यह चिट्ठी लेते जाओ। चौक में लैटर-बक्स है न, वहाँ डाल देना। कहीं भूल न जाना! यह एक जरूरी चिट्ठी

है। इसी डाक से निकल जानी चाहिए।"

कमल ने चिट्ठी लेकर जेब में डाल ली। रास्ते में उसे अपनी कक्षा का एक लड़का मिला। वह तेजी से कदम उठाता जा रहा था। कमल ने पुकारा—"सुधीर भाई, नमस्ते। तुम दौड़े क्यों जा रहे हो? क्या बात है?"

"तो क्या आज ग्यारह बजे पाठशाला पहुँचोगे? देखते नहीं हो कि देर हो चुकी है। तुम भी जरा तेजी से चलो।" सुधीर ने कहा।

और दोनों मित्र तेजी से पाठशाला जा पहुँचे।

कमल चिट्ठी डालना तो भूल ही गया। दोपहर को आधी छुट्टी हुई। कोई फल खरीदने के लिए उसने जेब में हाथ डाला तो मालूम हुआ कि चिट्ठी जेब में पड़ी है। वह उसी समय भागकर गया और चिट्ठी लैटर-बक्स में डाल आया।

शाम को घर पहुँचा तो पिताजी ने पूछा—

"कमल, वह चिट्ठी तो डाल दी थी न?"

"जी हाँ, डाल तो दी थी···पर···" कमल ने हिचकिचाते हुए कहा।

"पर क्या?" पिताजी ने पूछा।

उसने सारी बात कह सुनाई। वह कह रहा था, पर डर भी लग रहा था कि पिताजी नाराज होंगे।

पर वे नाराज नहीं हुए, उल्टे कुछ प्रसन्न ही हुए। उन्हें कमल के सच बोलने पर बड़ी प्रसन्नता हुई।

वे समझाकर कहने लगे—"बेटा, तुमने सच्ची बात बता दी, इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। कभी भी भूल हो जाए तो उसे छिपाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। एक झूठ छिपाने के लिए दस झूठी बातें कहनी पड़ती हैं।"

भूल सभी से होती है, हो सकती है। पर जो अपनी भूल को मान लेता है और उसके लिए सच्चे दिल से क्षमा चाहता है, वह अपनी भूल को एक दिन सुधार लेता है। किन्तु जो भूल भी करता है और उसको छिपाने के लिए झूठ भी बोलता है, वह दो बुरी बातें करता है।

एक बात और ध्यान में रखने की है। हर बार भूल करो और हर बार क्षमा माँगते फिरो, यह भी कोई अच्छी आदत नहीं है। दोबारा भूल नहीं हो, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए।

जब कोई घर आए

रमेश घर पर था।
उसके पिताजी बाहर गए हुए थे।
एक सज्जन आए। उन्होंने पुकारा—
"पंडित रामनाथजी!"
यह रमेश के पिताजी का नाम है।
रमेश झट बाहर निकल आया है।

पुकारने वाले सज्जन को 'नमस्ते' कही।
फिर कहने लगा—"आइये, बैठिये।
पिताजी इस समय घर में नहीं हैं।
बाज़ार गए हैं, अभी आते ही होंगे।"

ये सज्जन बैठे नहीं; कहने लगे—"मैं फिर आ जाऊँगा।"

रमेश ने पूछा— "आपका शुभ नाम क्या है? पिताजी से क्या कहूँ? आप कितनी देर बाद आएँगे?"

ये सज्जन कहने लगे—"मेरा नाम रामदास है। कह देना कि एक बजे फिर आऊँगा।"

रमेश ने नाम कापी पर लिख लिया; थोड़ी देर बाद रमेश के पिताजी आए।

रमेश ने सारी बात उनसे कह दी।

नाम भी बता दिया और फिर आने का समय भी।

रमेश अच्छा लड़का है। वह ढंग से बात करना जानता है।

कोई गँवार होता तो कह देता—"पिताजी नहीं है।"

यह कोई बात करने का ढंग है !

न नाम पूछा, न काम ।

और फिर वह अपने पिताजी से क्या कहे कि कौन आए थे ?

नाम तो पूछा नहीं ।

काम तो पूछा नहीं ।

ऐसे बैठो

पैर पसारकर बैठना ठीक नहीं।
पैर पर पैर रखकर बैठना ठीक नहीं।
कुर्सी पर बैठकर पैर हिलाना ठीक नहीं।
उकड़ूँ बैठना ठीक नहीं।
गरदन झुकाकर बैठना ठीक नहीं।

झुककर लिखो मत ।
झुककर पढ़ो मत ।
सीधे बैठो ।
पढ़ते समय पालथी मारकर बैठो ।
खाते समय पालथी मारकर बैठो ।
किसी के घर जाओ तो ठीक ढंग से बैठो ।

न पूछना, न बताना

वार्षिक परीक्षा हो रही थी। राजन और माधव पास-पास बैठे थे। एक सवाल माधव को नहीं आता था, उसने राजन से पूछा। राजन बताने लगा। इतने में एक अध्यापक ने, जो वहाँ घूम रहे थे, देख लिया। दोनों को मुख्याध्यापक के पास ले गए और उनको सारी बात बता दी।

मुख्याध्यापकजी ने कहा—"इन दोनों की स्लेटें छीन लीजिए और इन्हें बाहर निकाल दीजिए। हिसाब में दोनों को फेल कर दीजिए।"

राजन ने कहा—"मैंने तो नकल नहीं की, माधव मुझसे पूछ रहा था। मुझे सजा नहीं मिलनी चाहिए। कसूर मेरा नहीं माधव का है।"

मुख्याध्यापकजी ने कहा—"तुम समझते हो कि परीक्षा में पूछना कसूर है, किन्तु बताना कसूर नहीं। यह तुम्हारी भूल है। पूछनेवाला और बतानेवाला दोनों कसूरवार हैं। माधव भी कसूरवार और तुम भी। जितना कसूर उसका है, उतना ही तुम्हारा भी।"

परीक्षा में बैठकर न किसी से कुछ पूछो और न किसी को कुछ बताओ।

बाएँ चलो

हमेशा अपने बाएँ चलो। अगर बाएँ नहीं चलोगे तो सामने से आनेवालों से टक्कर लगेगी। मुड़-मुड़कर चलना पड़ेगा। रुक-रुककर चलना पड़ेगा।

बायीं ओर की पटरी पर चलो। पटरियाँ पैदल चलने वालों के लिए हैं।

सड़क को मोटरों, ताँगों और साइकिलों के लिए छोड़ दो। बीच सड़क में चलोगे तो टकराने का डर है।

बायीं ओर की पटरी पर चलते हो तो कोई डर नहीं है। न किसी से टकराने का, न किसी चीज से दबने का।

बायीं ओर चलने से—
समय की बचत होती है।
चलने में सुविधा होती है।
जीवन की रक्षा होती है।
नियम का पालन होता है।
अच्छे नागरिक नियमों का पालन करते हैं।

खेल में

प्रकाश—भई, आज कबड्डी का खेल खूब मजेदार रहा। दोनों टोलियाँ बराबर की थीं, पूरा-पूरा मुकाबला था।

यशपाल—हाँ, आखिर तक हार-जीत का कोई फैसला न हो सका।

प्रकाश—सच पूछो तो हार तो हमारी टोली की हुई।

यशपाल—वह कैसे ?

प्रकाश—बात यह थी कि मदन मुझे छू गया था, पर मैंने मानने से इनकार कर दिया। मैंने कह दिया कि 'नहीं, मुझे नहीं छुआ है।' अगर मैं सच-सच कह देता तो हमारी टोली हार जाती।

यशपाल—तो तुमने झूठ कहा था ?

प्रकाश—और क्या !

यशपाल—और अगर तुम झूठ न बोलते तो क्या बिगड़ जाता ?

प्रकाश—हम हार जो जाते।

यशपाल—तो क्या बिगड़ जाता ?

प्रकाश—तो क्या बिगड़ जाता ? तो झूठ बोलने से क्या बिगड़ गया ? अरे यशपाल, तुम भी अजीब आदमी हो। इस छोटी-सी बात में झूठ बोल भी दिया तो क्या हुआ ?

यशपाल—बस, यही तो तुम्हारी भूल है। मैं कहता हूँ कि यदि तुम छोटी-छोटी बातों में सच नहीं बोल सकते तो बड़ी बातों में क्या बोल सकोगे ! जो आदमी छोटा काम नहीं कर सकता वह बड़ा काम क्या खाक करेगा ? जरा सोचो कि अगर तुम सच बोल देते और तुम्हारी टोली की हार हो जाती तो भी कुछ न बिगड़ता। खेल तो खेल ही होता है। उसमें हार-जीत से लजाने और प्रसन्न होने की आवश्यकता नहीं। हाँ, खेल के नियमों का सचाई से पालन अवश्य करना चाहिए। फिर चाहे हार हो या जीत। और भैया, झूठ तो झूठ ही रहेगा—चाहे खेल के मैदान में झूठ बोलो या घर में या पाठशाला में।

जो लोग खेल में भी झूठ बोलते हैं वे आगे-पीछे सच बोलेंगे, इस बात का विश्वास कौन कर सकता है ?

धक्का-मुक्की बन्द करो

पाठशाला की छुट्टी होती है, सभी छात्र एकदम बाहर निकलने का यत्न करते हैं। पर होता क्या है?

दरवाजे पर भीड़ जमा हो जाती है और धक्का-मुक्की होने लगती है।

कैसी असभ्यता है! अरे भाई, छुट्टी तो हो ही गई। अब तुम्हें यहाँ कोई बाँधकर नहीं रखेगा। बारी-बारी बाहर निकलो। कतार बना लो। इस तरह जल्दी निकल सकोगे। धक्का-मुक्की भी नहीं होगी। शोर भी नहीं मचेगा।

कतार बनाना सीखो।

अपनी बारी आने पर आगे बढ़ो।

बस पर चढ़ते समय कतार बना लो।

ट्राम पर चढ़ते समय कतार बना लो।

टिकट खरीदना हो तो कतार बना लो।

कहने का मतलब है कि कतार में खड़ा होना सीखो। अपनी बारी पर काम करो।

ऐसा करने से काम जल्दी होगा।

लड़ाई-झगड़ा नहीं होगा।

दूसरों पर हँसो मत

वर्षा हो चुकी थी। सड़क पर कीचड़ हो गया था। लाठी टेकता एक बूढ़ा चला जा रहा था। कीचड़ में उसका पैर फिसल गया और वह गिर पड़ा। आस-पास के सभी लोग उस पर हँसने लगे। कितनी बुरी बात है! ज़रा सोचो तो, भला इसमें हँसने की क्या बात है? क्या कोई गिर पड़े तो हँसना चाहिए? कैसी ढिठाई है!

जरा मन में सोचो—कभी तुम गिर पड़ो और आस-पास के लोग हँसने लगें तो तुम्हें कैसा लगेगा ?

तुम कहोगे, 'बहुत बुरा'।

तो फिर जब कोई गिर पड़ा है तो तुम क्यों हँसते हो ? यह बुरी बात है।

भले लड़के तो ऐसा नहीं करते।

जानते हो, वे क्या करते हैं ?

आगे बढ़कर गिरने वाले को उठाते हैं। उसका सामान गिरकर बिखर गया हो तो उसे बटोर देते हैं। उसकी सहायता करते हैं।

गिरों को उठाना चाहिए।

उनकी सहायता करनी चाहिए। दूसरे संकट में पड़ जाएँ तो उन पर हँसना नहीं चाहिए।

जहाँ-तहाँ लिखो मत

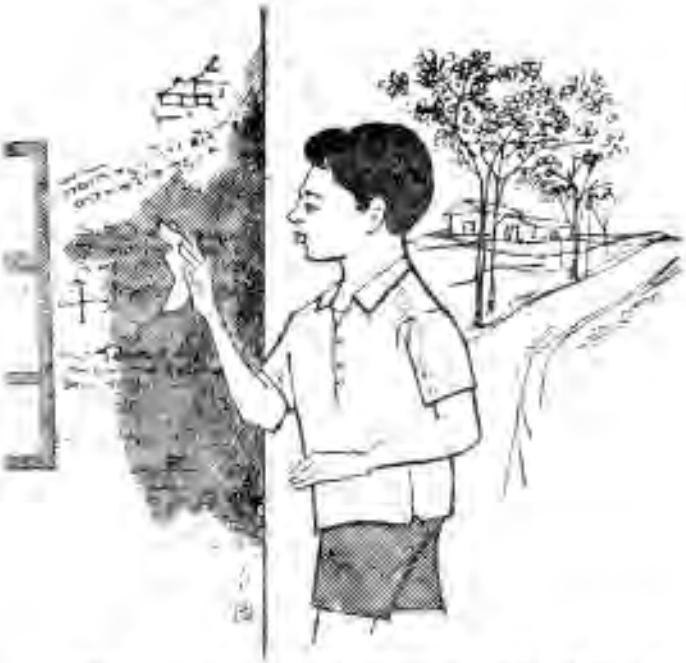

विनोद ने देखा, गुरुजी श्यामपट्ट पर खड़िया से प्रश्न निकालकर समझाते हैं। उसने भी गुरुजी की नकल करनी चाही; पर कर नहीं सका।

नकल करने के लिए भी अक़ल की ज़रूरत होती है।

हाँ, तो विनोद को चाहिए था कि श्यामपट्ट जैसी काली अपनी स्लेट उठाता और स्लेट-पेंसिल से उस

पर सवाल निकालता। नकल की नकल हो जाती और सवाल भी निकल आते। पर उसे तो अकल नहीं थी। उसने इससे बिलकुल ही उलट किया।

उसने घर से एक बड़ा-सा लकड़ी का कोयला लिया और घर की सफेद पुती हुई दीवारों पर अंट-शंट लिखने लगा। कुछ आड़ी-टेढ़ी लकीरें खींच दीं। पाठशाला चला तो भी कोयला जेब में रख लिया।

पाठशाला वह रोज़ कुछ देर से पहुँचता था। आज पन्द्रह मिनट पहले ही पहुँच गया। पाठशाला की सफेद पुती हुई दीवारें बड़ी भली लग रही थीं। विनोद ने इसकी ज़रा भी परवाह नहीं की। कोयला निकालकर वहीं अंट-शंट लिख डाला।

दस बजे पाठशाला लगी। गुरुजी ने देखा कि दीवारों को किसी ने गंदा कर दिया है। सबसे पूछा। विनोद से पूछा कि दीवारें किसने गंदी कीं? पर सब चुप रहे।

गुरुजी ने एक उपाय सोचा। कहने लगे—अच्छी बात है। मैं अभी पता लगाता हूँ कि यह सब किसने किया है। उन्होंने सबको खड़ा कर दिया। फिर सबके

हाथ देखे। अब विनोद घबराया। पर करता क्या? गुरुजी ने विनोद के भी हाथ देखे। उन पर कालिख लगी हुई थी—कोयले की कालिख।

गुरुजी ने पूछा—विनोद, तुम्हारे हाथ में यह कालिख कैसे लगी?

विनोद ने फिर भी सच्ची बात नहीं बताई। बहाना बनाने लगा।

गुरुजी ने कहा—अच्छा, अपनी जेब दिखाओ। जेब देखी तो कोयला निकला। जेब में भी कालिख लगी हुई थी। अब तो झूठ बोलने की गुंजाइश नहीं थी। विनोद ने दो कसूर किए। अच्छी-भली दीवारें गंदी कर दीं और उस पर झूठ बोला।

विनोद डर रहा था कि अब मेरी पिटाई होगी। पर गुरुजी ने उसे पीटा नहीं। पर सजा ऐसी दी कि उसे भर याद रहे। उसके अच्छे-भले गोरे मुँह पर कोयले की कालिख लगा दी। फिर उसे सारी पाठशाला में घुमाया और शाम तक मुँह धोने की मनाही कर दी।

विनोद का शर्म के मारे बुरा हाल था। अब उसे अपनी भूल ठीक से मालूम पड़ी।

उसने मन में निश्चय किया—चार बजे के बाद मैं दीवारों की कालिख पोंछ दूँगा। छुट्टी होने पर उसने ऐसा ही किया। घर पहुँचा तो पहला काम यह किया कि घर की दीवारें साफ कर दीं।

तब से उसने कभी अपनी पुस्तकों पर जगह-जगह अपना नाम नहीं लिखा। पुस्तकालय से जो पुस्तकें पढ़ने के लिए ले जाता, उन पर भी अपना नाम न लिखता। किसी दूसरे की पुस्तक पढ़ने को लेता, उस पर भी कभी अपना नाम न लिखता।

पुस्तकें पढ़ने के लिए होती हैं, लिखने के लिए नहीं।

सफेद पुती दीवारें भली लगती हैं, उन्हें कालिख से गंदा नहीं करना चाहिए।

पुस्तकालय की पुस्तकों पर या पढ़ने के लिए माँगकर ली हुई पुस्तकों पर अपना नाम नहीं लिखना चाहिए।

खाना-पीना

"कैलाश जी ! आइए, कुछ खा लें। वह सामने खोमचेवाला बैठा है, उसी से कुछ ले लेंगे।"

"नहीं, नारायण भाई, मैं तो कभी खोमचेवालों से कोई चीज लेकर नहीं खाता। ये लोग इतने गन्दे होते हैं कि कुछ न पूछो। चीज को कभी ढककर नहीं रखते। धूल उड़कर खाने की चीजों पर पड़ती रहती है और मक्खियाँ भिनभिनाती रहती हैं, सो अलग। इन मक्खियों की बात तो तुम जानते ही हो। अभी गंदगी के ढेर पर बैठेंगी और क्षण-भर में उड़कर खाने-पीने

की चीज़ पर बैठ जाएँगी। और यह भी सोच लो कि ये मक्खियाँ जब गन्दगी के ढेर से उड़कर खाने की चीज़ों पर बैठती हैं तो पैर धोकर नहीं बैठतीं। इनके पैरों में गन्दगी तो लगी ही रहती है। इसलिए मैं कभी भी किसी खोमचेवाले से या किसी ऐसे हलवाई की दुकान से कोई चीज़ लेकर नहीं खाता हूँ, जो शीशे की अलमारियों में चीज़ों को ढककर नहीं रखते। सच पूछो तो मुझे इन मक्खियों से बहुत घृणा है। मैं तो इन्हें बीमारी की जड़ समझता हूँ।"

० ० ०

आज रविवार की छुट्टी है। कृष्ण, गोविन्द, नन्दू और राजू बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने आज सैर करने का कार्यक्रम बना रखा है। चारों एक ही मुहल्ले में रहते हैं, एक ही कक्षा में पढ़ते हैं, आज ये साथ-साथ सैर करने जाएँगे।

खाना सबने घर पर बनवा लिया है। उसे डिब्बों में डालकर साथ ले जायेंगे। कुछ फल भी ले लिए हैं। खूब मजा आएगा।

आओ, इनका पीछा करें—ये कहाँ-कहाँ जाते हैं, क्या-क्या देखते हैं और क्या कुछ करते हैं।

अभी कुछ ही दूर चले होंगे कि नन्दू को पेशाब आ गया। उसने अपना डिब्बा राजू को पकड़ा दिया और पेशाब करने पेशाबघर की ओर चला। पेशाब-घर रुका हुआ था। एक सज्जन पेशाब कर रहे थे। नन्दू ने उसका इंतजार नहीं किया। पेशाबघर के पास सड़क पर पेशाब करने लगा।

तीन साथी उधर देख रहे थे।

जब नन्दू लौटा तो राजू ने उसे खूब खरी-खरी सुनाईं। कहने लगा—"ऐसी क्या जल्दी थी जो तुम एक मिनट भी नहीं रुके और सड़क पर ही पेशाब करने लगे। यह बुरी बात है। इसी तरह तो गन्दगी फैलती है।"

नन्दू कुछ झेंप गया। चारों मित्र आगे बढ़े और घूमते-फिरते राजघाट जा पहुँचे।

वहाँ क्यारियों में खूब फूल खिले हुए थे। रंग-बिरंगे लाल, पीले, नीले, गुलाबी। क्यारी के पास एक पट्टी लगी हुई थी। उस पर लिखा था—'कृपया फूल न तोड़ें।' कृष्ण ने उसे पढ़ा तो सही, पर उस पर अमल नहीं किया। उसने गुलाब का एक सुन्दर-सा फूल तोड़ लिया और उसकी एक-एक पंखुड़ी करके

बिखेरने लगा। राजू की नजर पड़ी तो उसने फिर रोका।

"यह अच्छी बात नहीं है। जब लिखा है कि कृपया फूल न तोड़ें, तो फिर फूल क्यों तोड़ा? और जरा बताओ कि फूल की जो सुन्दरता डाली पर थी, क्या वह इस तरह तोड़कर मसल देने से रहेगी? हमें अच्छे नागरिकों की तरह आचरण करना चाहिए। जिस जगह का जो नियम हो, उसका पालन करना चाहिए।"

कृष्ण ने अपनी भूल मान ली। उसने प्रण किया कि वह फिर कभी ऐसा काम नहीं करेगा।

अब तक चारों मित्रों को कुछ-कुछ भूख लगने लगी थी। सोचा, खाना खा लें। चारों मित्र नल पर हाथ धोने गए। सबसे पीछे गोविन्द ने हाथ धोये। वह नल की टोंटी को खुला छोड़कर वापस आ गया। नल का पानी व्यर्थ ही बहता रहा।

अभी खाना डिब्बों से निकाला ही था कि राजू की नजर नल पर पड़ी।

उसने गोविन्द की ओर देखा। गोविन्द को अपनी भूल मालूम हुई। वह दौड़कर नल बन्द कर आया।

इस तरह नल खुला छोड़ देने से पानी व्यर्थ ही

बह जाता है। हमें इस प्रकार की सब बातों का ध्यान रखना चाहिए।

खा-पीकर चारों साथी कुछ देर इधर-उधर की बातें करते रहे। फिर घूमने निकले। चलते-चलते संतर-संतर जा पहुँचे। इधर-उधर देखा और फिर एक जगह बैठ गए। अब फलों की बारी थी। केले-संतरे खाकर वे उनके छिलकों को एक बड़े-से कागज में रखते जाते थे। खा-पीकर राजू उठा और सारे छिलके वहीं एक कोने में रखे कूड़ेदान में डाल दिये।

राजू समझदार लड़का है। वह अपने साथियों से अधिक समझदार है। उसे काम करने का ढंग आता है। वह कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे दूसरों को असुविधा हो या हानि पहुँचे।

कोई उजड्ड लड़का होता तो केले-संतरे के छिलके कहीं इधर-उधर फेंक देता। जिस किसी का पैर उन पर पड़ता, फिसलकर गिर पड़ता। हड्डी-पसली टूट जाती।

छोटी-सी भूल से कितनी हानि होती है। राजू

के रंग-ढंग से जान पड़ता है कि वह एक दिन बड़ा आदमी बनेगा। देश का नेता बनेगा। जनता का सेवक बनेगा। तुम भी राजू जैसे बनो।

एक बार में एक काम

एक बार में एक ही काम करो।

दो काम कभी एक साथ मत करो।

एक साथ किए गए दो काम कभी ठीक नहीं होते।

इसलिए पढ़ते समय पढ़ो, खेलते समय खेलो।

गुरुजी पढ़ा रहे हैं, तुम साथियों से बातें कर रहे हो, तो क्या होगा ? जानते हो ?

तुम्हें पाठ याद नहीं होगा।

पाठ तुम्हारी समझ में नहीं आएगा।

तुम पढ़ते समय पढ़े नहीं, साथियों से बातें करते रहे।

एक नजर पुस्तक की ओर देखा, फिर बातें करने लगे।

तो एक साथ किए गए दो काम कभी ठीक नहीं होते।

० ० ०

गोपाल पाठशाला जा रहा था।

उसने घर पर अपना पाठ याद नहीं किया था।

उसे पहाड़े याद नहीं थे।

गुरुजी ने पहाड़े याद करने के लिए कह रखा था।

गोपाल ने सोचा, चलते-चलते याद कर लूंगा। उसने पहाड़े की पोथी हाथ में ले ली, बस्ता कन्धे से लटकाया और पाठशाला चल पड़ा।

वह चलता जाता और पहाड़े रटता जाता। कहीं भूल जाता तो किताब खोलकर देखने लगता। चलता-चलता रास्ते की ओर न देखकर किताब की ओर देखने लगता। उधर से एक साइकिल आ रही थी। गोपाल उसके साथ टकरा गया।

साइकिलवाले का कसूर नहीं था। कसूर तो गोपाल का था।

वह चलते-चलते पढ़ रहा था। उसे चलते समय

सामने रास्ते की ओर देखना चाहिए था।

दो काम एक साथ नहीं करने चाहिए थे।

पर उसने ऐसा किया। और इसका जो नतीजा निकला वह आपके सामने है।

लापरवाह मत बनो

ये मस्तरामजी हैं। आओ, आज तुम्हारा इनसे परिचय कराएँ।

इनका परिचय नाम बता देने मात्र से नहीं होगा। सिर से पैर तक इनकी एक-एक चीज से परिचय करना होगा। तभी इन्हें ठीक से समझ सकोगे।

तो सिर से ही शुरू करते हैं। जरा इनके बालों की ओर देखो। मालूम होता है कि चिड़िया का घोंसला है। शायद महीने भर से तेल की एक बूंद इन बालों में नहीं पड़ी। फिर कंघी की तो बात ही छोड़ो। भला इस झाड़-झंखाड़ में कंघी का क्या काम ? वहां से तो वह अपने सारे दाँत तुड़वाकर ही निकल सकती है।

इधर बालों ने आधे माथे को ढक लिया है। वे कानों पर भी चढ़ आए हैं।

मुँह ऐसा दीख रहा है कि शायद आज उसे एक लोटा पानी भी नहीं मिला है।

दाँतों की ओर देखो तो पीले पड़ गए हैं। दातुन कब की थी, कुछ पता नहीं। मस्तरामजी के पास इन कामों के लिए समय कहाँ ? उन्हें सोने ही से फुर्सत नहीं मिलती। कुछ समय बचता है तो खेलने में खर्च हो जाता है।

यह लो, गले के बटन खुले पड़े हैं। मैल जमा हुआ गला साफ दिखाई दे रहा है। और बाँहों के बटन तो एकदम गायब हैं।

जेब बोझ के मारे नीचे को लुढ़क रही है। थोड़ी उधड़ भी गयी है। मस्तरामजी इस जेब से खूब काम

लेते है। मतलब की, बेमतलब की, जो भी चीज हाथ आ जाए, उसे जेब में ठूँस लेते है। पर जेब में रूमाल कभी नहीं रखते। क्या जरूरत है उसकी ? जब कभी हाथ पोंछने हुए, कमीज के पल्ले से पोंछ लिए। वह भला किस काम आएगी ? खामखाह रूमाल का बोझ कौन उठाता फिरे !

अब जरा नीचे देखो।

मस्तरामजी के पाजामे का नाड़ा हाथी की सूँड की तरह झूम रहा है। उसे ऊपर टाँगने का कष्ट मस्तराम ने कभी नहीं उठाया।

पाजामा आउन से उधड़ गया है। पर मस्तराम को इसकी कोई चिन्ता नहीं। उनकी बला से !

अब पाँव के जूते को देख लीजिए। इंच-इंच मोटी धूल की तह जमी हुई है। पर वे इसे कभी नहीं झाड़ेंगे। क्यों झाड़ें ? धूल झाड़ने के लिए उनके पास समय नहीं है।

अब जरा इनका बस्ता देखें। क्या कहने हैं ! उलटी-सीधी करके किताबें जैसे-तैसे उसमें ठूँस दी गयी हैं। सब पुस्तकों के ऊपर के चार-चार, छः-छः पृष्ठ गायब हैं। कापियों का भी कोई ढंग नहीं है। किसी भी कापी

पर न तो नाम लिखा गया है और न विषय।

ये हैं हमारे मस्तराम जी।
ढंग का कोई काम इन्हें करना नहीं आता।
ये श्रीमान बेहद फूहड़ और गन्दे हैं।

इनके पास विमलकुमार खड़े हैं।
अब इन्हें देखिये—
बालों में कंघी की हुई है।
साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए हैं।
बस्ता ठीक लगा रखा है।
जूतों पर पालिश किया हुआ है।
नहा-धोकर घर से चले हैं।

कहो, तुम कौन-सा बालक बनना पसन्द करोगे ?

बुरे बालक

मन में कुछ सोचते हैं।
मुँह से कुछ कहते हैं।
करते कुछ और हैं।

भले बालक

जो कुछ मन में सोचते हैं,
वही कुछ मुँह से बोलते हैं।
वही कुछ करते हैं।

कक्षा में

कक्षा में गुरु जी आते हैं। झट से उठकर खड़े हो जाओ। उठते समय गड़बड़ मत करो। शोर मत करो। वे बैठ जाएँ तब बैठो। पढ़ाने लगें तो चुपचाप सुनो। कोई बात समझ में न आए तो कहो—मेरी समझ में यह बात नहीं आयी। कृपा करके दुबारा बता दीजिए।

कक्षा में बैठकर चने, मुरमुरे, मूँगफली आदि कोई चीज मत खाओ। कक्षा में गन्दगी मत फैलाओ।

अगर घंटा खाली हो तो उसे व्यर्थ मत गँवाओ। पुस्तकालय में जाकर कोई पुस्तक पढ़ो। कोई पत्रिका पढ़ो।

घंटा समाप्त हो गया। गुरु जी चले गए। अब दूसरे गुरु जी आएँगे। बीच में थोड़ा-सा समय खाली बचता है। इस समय शोर मत मचाओ। क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे साथ वाले कमरे में दूसरी कक्षा के विद्यार्थी पढ़ रहे हैं? शोर करने से उन्हें

असुविधा होगी। अरे भाई, दो मिनट चुपचाप नहीं बैठ सकते तो फिर क्या कर सकते हो? अपने पर इतना भी काबू नहीं तो तुम जीवन में कोई बड़ा काम कैसे कर दिखाओगे?

सभा में

आज पाठशाला के विद्यार्थियों की सभा है। इस पाठशाला के विद्यार्थी महीने में एक बार सभा किया करते हैं।

यह अच्छी बात है। इससे सभाओं में बोलने, गाने आदि का अवसर मिलता है। व्यर्थ की झिझक दूर होती है। विद्यार्थियों के सामाजिक जीवन का विकास होता है।

तो जरा देखें कि ये इतने सारे विद्यार्थी मन लगाकर सभा की कार्यवाही को सुन रहे हैं कि नहीं।

अरे, यह क्या? राम और रमेश गप-शप लड़ा रहे हैं। मदन बार-बार खाँस रहा है। मनोहर को छींकें आ रही हैं। गोपाल दाँत कुरेद रहा है। कमल नाक में उँगली डाले है। रमन उबासियाँ ले रहा है। माधव डकार मार रहा है। राजन कोई पत्रिका खोले उसकी तस्वीरें देख रहा है।

भला यह कोई सभा में बैठने का तरीका है? न आप कुछ सुनेंगे, न दूसरों को सुनने देंगे। यह सब बुरा

आचरण है। भले लड़के तो ऐसा नहीं करते।

वे सभा-समाज में ठीक समय पर पहुँच जाते हैं। चुपचाप बैठते हैं। साथियों से गप्पें नहीं मारते। सभा में बैठकर कुछ खाते-पीते नहीं।

भले लड़के सभा-समाज में बैठकर कोई ऐसा काम नहीं करते जिससे पास बैठे दूसरे लोगों को असुविधा हो।

यों ही बिना बात तालियाँ नहीं बजाते। देर से आकर आगे बैठने का प्रयत्न नहीं करते। बीच से उठकर नहीं जाते।

प्रबन्ध करने वाले जैसा कहें, वैसा ही करना चाहिए।

●●●